Factors Determining the Size of Gain from International Trade

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभ पर निम्न तत्वों का प्रभाव पड़ता है।

1. लागत अनुपातों में अन्तर (Difference in Cost Ratio)

हैरड के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभ इस बात पर निर्भर रहता है कि दो देशों में उत्पादन-लागत अनुपातों में क्या सम्बन्ध है। लाभ उसी समय सम्भव है जब दोनों देशों में लागत अनुपात भिन्न भिन्न हो। दो देशों में लागत अनुपात में जितना अधिक अन्तर होगा, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से उन देशों को उतना ही अधिक लाभ प्राप्त होगा।

हैरड के अनुसार "लाभ के कारण जब व्यापार का विस्तार किया जाता है तो एक ऐसी स्थिति आएगी जब एक देश की अनुपात लागत, दूसरे देश के बराबर हो जाएगी। एक देश को विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में विस्तार और संकुचन उस समय तक करना चाहिए जब तक उस देश के लागत-अनुपात विदेश के लागत-अनुपात के बराबर नहीं हो जाते।

2. देशों की उत्पादन-क्षमता (Production capacity of the country)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभ पर देश की उत्पादन क्षमता एवं उत्पादकीय कुशलता का प्रभाव भी पड़ता है। यदि एक देश की उत्पादन क्षमता एवं उत्पादकीय कुशलता बढ़ती है तो दूसरे देश को सस्ती वस्तुएं आयात करके लाभ प्राप्त होगा फलस्वरूप इससे दूसरे देश के लिए व्यापार की शर्तें अधिक अनुकूल हो जायेगी। उत्पादन क्षमता बढ़ने से दूसरे देश के लिए व्यापार की शर्तें इसलिए अनुकूल हो जाती है क्योंकि पहले देश में लागत और कीमतों में कमी होती है तथा व्यापार में विस्तार होता है। जिससे दूसरे देश को लाभ होता है। इसके विपरीत, यदि एक देश की उत्पादन क्षमता एवं उत्पादकीय कुशलता घटती है तो दूसरे देश को हानि होगी क्योंकि इससे दूसरे देश की व्यापार शर्तें प्रतिकूल हो जाएंगी। तकनीकी प्रगति, प्रशिक्षित श्रम-शक्ति एवं नव-प्रवर्तन आदि कई कारणों से देश की उत्पादन क्षमता बढ़ सकती है।

3. व्यापार की शर्तें अथवा मांग और पूर्ति की सापेक्षिक लोच (Terms of Trade or Relative Elasticities of Demand and Supply)

व्यापार की शर्तों का आशय उस दर से है जिसके अनुसार एक देश की वस्तुओं का दूसरे देश की वस्तुओं से विनिमय होता है। व्यापार की शर्तें उन वस्तुओं की कीमतों पर निर्भर करती हैं जिनका व्यापार किया जाता है अतः व्यापार की शर्तें तुलनात्मक कीमतों एवं आयात कीमतों के बीच सम्बन्ध व्यक्त करती हैं।

एक देश के दूसरे देश की वस्तु की मांग जितनी अधिक बेलोचदार होगी, पहले देश के लिए व्यापार की शर्तें प्रतिकूल होंगी एवं मांग लोचदार होने पर व्यापार की शर्तें अनुकूल होंगी। ताजिग के अनुसार "व्यापार से उस देश को सबसे अधिक लाभ होता है जिसकी वस्तुओं की मांग विदेशों में अधिक होती है तथा स्वयं उसकी मांग विदेशी वस्तुओं के लिए कम होती है।" पूर्ति की लोच का भी

व्यापार की शर्तों पर प्रभाव पड़ता है। यदि एक देश की निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की पूर्ति लोचदार है तो व्यापार की शर्तें उसके अनुकूल होगी अन्यथा प्रतिकूल। इसी प्रकार देश जिन वस्तुओं का आयात करता है यदि उनकी विदेशों में पूर्ति बेलोचदार है तो देश के लिए व्यापार की शर्तें अनुकूल होगी अन्यथा प्रतिकूल।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि व्यापार की शर्तें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ को प्रभावित करती है। व्यापार की शर्तों के अनुकूल होने की दशा में देश को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से मिलने वाला लाभ अधिक हो जाता है। जबकि व्यापार शर्तों के प्रतिकूल होने पर मिलने वाले लाभ का आकार घट जाता है।

4. **आय का स्तर** (Level of Income)

किसी देश की कुल आय का स्तर भी एक ऐसा कारक है जो व्यापार के लाभ और हिस्से को निर्धारित करता है। जिस देश की वस्तुओं की मांग अन्य देशों में